• कविताएं..

दोस्त...

दोस्त
धूप-सी चिलचिलाती
जिन्दगी में उगे
घने दरख्त हैं
जो हरते हैं मन का
ताप-सन्ताप,
पोंछते हैं
माथे पर छलकते
स्वेद-बिन्दु,
कांपते हाथों को
दृढ़ करते हैं
अपने प्रगाढ़ स्पर्श से,
छाले भरे पैरों को
समेट लेते हैं हथेलियों में,
वे बोते हैं बीज यारियों के
ताकि
सलामत रहें हम
आंधी-तूफान, धूप और बारिशों में
दोस्त और कुछ नहीं
बस एक हरा पेड़ होते हैं
जिसकी सघन छाया में
दोस्ती करती है कुछ देर विश्राम।

-मालिनी गौतम

महक फूलों की...

बसंत के आते ही
मैं भर लाती हूं
अपनी सहज अनुभूति के आंचल में
महक फूलों की
बसंत के आते ही
मैं मंडराती हूं
उन पर तितली-सी
गुनगुन करती
मैं काव्य रूप के पुष्प भी
बिन लाती हूं
राग, रंग, छंदों के
ललछौने बासंती मौसम की
देहरी के द्वार खोल
मैं जब तब
सृजन के क्षण भी
चुन लाती हूं
सच पूछो तो
मेरे मन के गुलशन
अपने आप में
राग, रंग, छंदों के
फूलों से
महके वातास हैं
बासंती मौसम में
सुगंधित मधुमास हैं

-सरस्वती माथुर

• कहानी/-मोहन राकेश

मलबे का मालिक...

गतांक से आगे...

लोग आशा कर रहे थे कि यह सारी कहानी जरूर किसी न किसी तरह गनी तक पहुंच जाएगी...जैसे मलबे को देखकर ही उसे सारी घटना का पता चल जाएगा। और गनी मलबे की मिट्टी को नाखूनों से खोद-खोदकर अपने ऊपर डाल रहा था और दरवाजे के चौखट को बांह में लिये हुए रो रहा था, बोल, चिरागदीना, बोल! तू कहां चला गया, ओए? ओ किश्वर! ओ सुलताना! हाय, मेरे बच्चे ओएऽऽ! गनी को पीछे क्यों छोड़ दिया, ओएऽऽऽ!

और भुरभुरे किवाड़ से लकड़ी के रेशे झड़ते जा रहे थे।

पीपल के नीचे सोए रक्खे पहलवान को जाने किसी ने जगा दिया, या वह खुद ही जाग गया। यह जानकर कि पाकिस्तान से अब्दुल गनी आया है और अपने मकान के मलबे पर बैठा है, उसके गले में थोड़ा झाग उठ आया जिससे उसे खांसी आ गयी और उसने कुएं के फर्श पर थूक दिया। मलबे की तरफ देखकर उसकी छाती से धौंकनी की-सी आवाज निकली और उसका निचला होंठ थोड़ा बाहर को फैल आया।

गनी अपने मलबे पर बैठा है, उसके शागिर्द लच्छे पहलावन ने उसके पास आकर बैठते हुए कहा।

मलबा उसका कैसे है? मलबा हमारा है! पहलवान ने झाग से घरघराई आवाज में कहा।

मगर वह वहां बैठा है, लच्छे ने आंखों में एक रहस्यमय संकेत लाकर कहा।

बैठा है, बैठा रहे। तू चिलम ला! रक्खे की टांगें थोड़ी फैल गयीं और उसने अपनी नंगी जांघों पर हाथ फेर लिया।

मनोरी ने अगर उसे कुछ बता-वता दिया तो...? लच्छे ने चिलम भरने के लिए उठते हुए उसी रहस्यपूर्ण ढंग से कहा।

मनोरी की क्या शामत आयी है?

लच्छा चला गया।

कुएं पर पीपल की कई पुरानी पत्तियां बिखरी थीं। रक्खा उन पत्तियों को उठा-उठाकर अपने हाथों में मसलता रहा। जब लच्छे ने चिलम के नीचे कपड़ा लगाकर चिलम उसके हाथ में दी, तो उसने कश खींचते हुए पूछा, और तो किसी से गनी की बात नहीं हुई?

नहीं।

ले, और उसने खांसते हुए चिलम लच्छे के हाथ में दे दी। मनोरी गनी की बांह पकड़े मलबे की तरफ से आ रहा था। लच्छा उकडूं होकर चिलम के लम्बे-लम्बे कश खींचने लगा। उसकी आंखें आधा क्षण रक्खे के चेहरे पर टिकतीं और आधा क्षण गनी की तरफ लगी रहतीं।

मनोरी गनी की बांह थामे उससे एक कदम आगे चल रहा था-जैसे उसकी कोशिश हो कि गनी कुएं के पास से बिना रक्खे को देखे ही निकल जाए। मगर रक्खा जिस तरह बिखरकर बैठा था, उससे गनी ने उसे दूर से ही देख लिया। कुएं के पास पहुंचते न पहुंचते उसकी दोनों बाहें फैल गयीं और उसने कहा, रक्खे पहलवान!

रक्खे ने गरदन उठाकर और आंखें जरा छोटी करके उसे देखा। उसके गले में अस्पष्ट-सी घरघराहट हुई, पर वह बोला नहीं।

रक्खे पहलवान, मुझे पहचाना नहीं? गनी ने बाहें नीची करके कहा, मैं गनी हूं, अब्दुल गनी, चिरागदीन का बाप!

पहलवान ने ऊपर से नीचे तक उसका जायजा लिया। अब्दुल गनी की आंखों में उसे देखकर एक चमक-सी आ गयी थी। सफेद दाढ़ी के नीचे उसके चेहरे की झुर्रियां भी कुछ फैल गयी थीं। रक्खे का निचला होंठ फड़का। फिर उसकी छाती से भारी-सा स्वर निकला, सुना, गनिया!

गनी की बाहें फिर फैलने को हुईं, पर पहलवान पर कोई प्रतिक्रिया न देखकर उसी तरह रह गयीं। वह पीपल का सहारा लेकर कुएं की सिल पर बैठ गया।

ऊपर खिड़कियों में चेहमेगोइयां तेज हो गयीं कि अब दोनों आमने-सामने आ गये हैं, तो बात जरूर खुलेगी... फिर हो सकता है दोनों में गाली-गलौज भी हो।...अब रक्खा गनी को हाथ नहीं लगा सकता। अब वे दिन नहीं रहे।...बड़ा मलबे का मालिक बनता था!...असल में मलबा न इसका है, न गनी का। मलबा तो सरकार की मलकियत है! मरदूद किसी को वहां गाय का खूंटा तक नहीं लगाने देता!... मनोरी भी डरपोक है। इसने गनी को बता क्यों नहीं दिया कि रक्खे ने ही चिराग और उसके बीवी-बच्चों को मारा है!...रक्खा आदमी नहीं सांड है! दिन-भर सांड की तरह गली में घूमता है!...गनी बेचारा कितना दुबला हो गया है! दाढ़ी के सारे बाल सफेद हो गये हैं!...

गनी ने कुएं की सिल पर बैठकर कहा, देख रक्खे पहलान, क्या से क्या हो गया है! भरा-पूरा घर छोड़कर गया था और आज यहां यह मिट्टी देखने आया हूं! बसे घर की आज यही निशानी रह गयी है! तू सच पूछे, तो मेरा यह मिट्टी भी छोड़कर जाने को मन नहीं करता! और उसकी आंखें फिर छलछला आयीं।

पहलवान ने अपनी टांगें समेट लीं और अंगोछा कुएं की मुंडेर से उठाकर कन्धे पर डाल लिया। लच्छे ने चिलम उसकी तरफ बढ़ा दी। वह कश खींचने लगा।

तू बता, रक्खे, यह सब हुआ किस तरह? गनी किसी तरह अपने आंसू रोककर बोला, तुम लोग उसके पास थे। सब में भाई-भाई की-सी मुहब्बत थी। अगर वह चाहता, तो तुममें से किसी के घर में नहीं छिप सकता था? उसमें इतनी भी समझदारी नहीं थी?

ऐसे ही है, रक्खे को स्वयं लगा कि उसकी आवाज में एक अस्वाभाविक-सी गूंज है। उसके होंठ गाढ़े लार से चिपक गये थे। मूंछों के नीचे से पसीना उसके होंठ पर आ रहा था। उसे माथे पर किसी चीज का दबाव महसूस हो रहा था और उसकी रीढ़ की हड्डी सहारा चाह रही थी।

पाकिस्तान में तुम लोगों के क्या हाल हैं? उसने पूछा। उसके गले की नसों में एक तनाव आ गया था। उसने अंगोछे से बगलों का पसीना पोंछा और गले का झाग मुंह में खींचकर गली में थूक दिया।

क्या हाल बताऊं, रक्खे, गनी दोनों हाथों से छड़ी पर बोझ डालकर झुकता हुआ बोला, मेरा हाल तो मेरा खुदा ही जानता है। चिराग वहां साथ होता, तो और बात थी।...मैंने उसे कितना समझाया था कि मेरे साथ चला चल। पर वह जिद पर अड़ा रहा कि नया मकान छोड़कर नहीं जाऊंगा-यह अपनी गली है, यहां कोई खतरा नहीं है। भोले कबूतर ने यह नहीं सोचा कि गली में खतरा न हो, पर बाहर से तो खतरा आ सकता है! मकान की रखवाली के लिए चारों ने अपनी जान दे दी!...रक्खे, उसे तेरा बहुत भरोसा था।

-जारी

पहलवान ने ऊपर से नीचे तक उसका जायजा लिया। अब्दुल गनी की आंखों में उसे देखकर एक चमक-सी आ गयी थी। सफेद दाढ़ी के नीचे उसके चेहरे की झुर्रियां भी कुछ फैल गयी थीं।

रक्खे का निचला होंठ फड़का। फिर उसकी छाती से भारी-सा स्वर निकला, सुना, गनिया! गनी की बाहें फिर फैलने को हुईं, पर पहलवान पर कोई प्रतिक्रिया न देखकर उसी तरह रह गयीं...

• शायरी...

उसकी आंखों में थी गहराई बहुत
क्यूं सताती है ये तन्हाई बहुत
हिज्र की सौग़ात क्या लाई बहुत
बे-तहाशा याद भी आई बहुत

◆ ◆ ◆

पेच-ओ-ख़म जुल्फों का सारा खुल गया
रात भर आंखों में लहराई बहुत
क्यूं चमक उठती है बिजली बार बार
ऐ सितमगर ले ने अंगड़ाई बहुत

◆ ◆ ◆

घर से 'साहिल' आ के लौटी धूप क्या
हो गई मेरी तो रूस्वाई बहुत।

-साहिल अहमद

◆ ◆ ◆

अज़ल से अब तलक मुझ को इषारे कर रहा था जो
शब-ए-ना-आश्ना से वो सितारा ले गया कोई

-रियाज़ लतीफ़

• बीच हमारे कुछ दूरी है...

बीच हमारे कुछ दूरी है।
शायद उसकी मजबूरी है।
संवादों से लगे पराया
दिल ही दिल में मंजूरी है।
मन बहकाए, तन बहकाए
गंध प्यार की कस्तूरी है।
जब-जब बरसी प्यार की-वर्षा
भीगी ये दुनिया पूरी है।

-वर्षा सिंह